आचार्य तुलसी के 96वें जन्मोत्सव कार्यक्रम का दूसरा दिन

अणुव्रत के बिना लोकतंत्र स्वस्थ नहीं रह सकता : आचार्य महाप्रज्ञ

लाडनूं 21 अक्टूबर।

राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ ने जैन विश्व भारती स्थित सुधर्मा सभा में आचार्य तुलसी के 96वें जन्म दिवस पर आयोजित त्रिदिवसीय कार्यक्रम के दूसरे दिन उपस्थित श्रद्धालुओं एवं राजस्थान विधानसभा के मुज़्य सचेतक विरेन्द्र बेनीवाल, चुरू सांसद रामसिंह कस्वा, रतनगढ़ विधायक राजकुमार रिणवा, पूर्व केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्री सुभाष महरिया एवं अनेक राजनेताओं को संबोध प्रदान करते हुए कहा कि अणुव्रत के बिना लोकतंत्र स्वस्थ नहीं रह सकता। उन्होंने कहा कि संसद एवं विधापिका लोकतंत्र बड़े स्तंभ है। इन दोनों पर गहरा चिंतन करें तो देश का कायाकल्प हो सकता है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने गुरुदेव तुलसी को देश के चरित्र को व्यापक बनाने वाले महापुरुष बताते हुए कहा कि आचार्य तुलसी के सामने मानव और मानवता ही रहते थे। उन्होंने राजनीति सामाजिक, शिक्षा आदि अनेक क्षेत्रों में कार्य किया। आचार्य तुलसी ने आजादी के बाद चिंतन किया कि सत्ता हाथ में आ रही है। सत्ता के लिए दौड़ रहेगी, ऐसी स्थिति में नैतिकता कमजोर पड़ जायेगी। इस चिंतन के साथ नैतिकता को बल देने के लिए अणुव्रत आन्दोलन का प्रारंभ किया। आचार्य महाप्रज्ञ ने राजस्थान सरकार को अगाह करते हुए कहा कि नक्सलवाद से राजस्थान सुरक्षित नहीं है। उन्होंने कहा कि नक्सली आकास से नहीं टपकते हैं। इन नक्सलियों को आप लोग ही जन्म दे रहे हैं। जब तक सरकार और समाज जनता की मूलभूत आवश्यकताओं रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा चिकित्सा एवं सुरक्षा पर ध्यान नहीं देगा, तब तक इस समस्या का समाधान नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि आज पूरी दुनिया आचार्य तुलसी की जरूरत है।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से मानवधर्म को प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया। वे राष्ट्रपति से लेकर गरीबी की रेखा से नीचे का जीवन यापन करने वालों को मानव धर्म का संदेश दिया एवं नशा मुक्त जीवन जीने की प्रेरणा देते थे। उन्होंने अपने चिंतन एवं परामर्श के द्वारा राष्ट्र की अनेक समस्याओं का समाधान किया। युवाचार्यवर ने आचार्य तुलसी द्वारा राजनीति में निखार लाने के प्रयासों की सरहाना की।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि हम सब यात्री हैं। जीवन में अनेक यात्राएं करते हैं। साधु पद यात्रा करता है और गृहस्थ वाहन का उपयोग करता है। जोर कार, बस रेल की यात्राएं करते हैं वे खिड़की के पास बैठना पसंद करते हैं। क्योंकि उनको बाहर के दृश्य देखने होते हैं। उन्होंने कहा कि बाहर देखना

आसान है परन्तु अपने भीतर देखना कठिन है। जो अपने भीतर देखना जानता है वह अपनी सोई हुई शक्तियों को पहचान लेता है। उन्होंने कहा कि आचार्य तुलसी भीतर देखने का ही संदेश दिया। उन्होंने अणुव्रत को संजीवनी बुटी बताते हुए कहा कि अनेक व्यक्तियों के अनुभव बताते हैं कि अणुव्रत के द्वारा जीवन बदल गया है।

मुज़्य सचेतक वीरेन्द्र बेनीवाल ने कहा कि आचार्य तुलसी की प्रेरणा से ही मेरे स्वर्गीय पिताजी ने विधानसभा में पशु-पक्षियों की बली के विरूद्ध बिल पेश किया था, इसी कारण इस प्रकार की मंदिरों में चढने वाली बलियों पर रोक लग गई है। पूर्व केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्री सुभाष महरिया ने आचार्य तुलसी के प्रति अपनी श्रद्धा अर्पित की एवं आचार्य महाप्रज्ञ के विचारों को, पुस्तकों को जन-जन के लिए बताते हुए संकल्प व्यक्त किया कि आचार्यश्री के संदेश को देश की आम जनता तक पहुंचाने में अपना योगदान दूंगा। चुरू सांसद रामसिंह कस्वा ने आचार्य तुलसी के साथ अपने कस्बे एवं स्वयं के साथ जुड़े प्रसंगों को प्रस्तुत करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ को चुरू पधारने की अर्ज की। रतनगढ़ विधायक राजकुमार रिणवा ने आचार्य तुलसी के अवदानों को समाजोपयोगी बताया। स्थानीय पूर्व विधायक ठाकुर मनोहरसिंह ने अपने क्षेत्र में आगंतुकों का स्वागत किया। प्रेक्षाप्राध्यापक मुनि किशनलाल, मुनि मदनकुमार, साध्वी कमलश्री ने भावाभिव्यक्ति दी। मुनि तन्मयकुमार, मुनि जंबूकुमार, साध्वी समुदाय एवं स्थानीय तेरापंथ कन्यामण्डल ने गीतों के द्वारा श्रद्धाभिव्यक्ति दी। आचार्य तुलसी के संसार पक्षीय परिवार की तरफ से कुमारी प्रांजल खटेड़ ने विचार रखे। जैन विश्व भारती के उपमंत्री विजयसिंह चौरड़िया, चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष शांतिलाल बरमेचा, जय तुलसी फाउण्डेशन के अध्यक्ष कमल दुगड़ ने आगंतुक अतिथियों का साहित्य के द्वारा सज़्मान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

महाप्रज्ञ ने कहा सीरीज का 36वां भाग विमोचित

आचार्य महाप्रज्ञ के प्रवचनों की प्रत्येक महीने प्रकासित होने वाली 'महाप्रज्ञ ने कहा' सीरीज का 36वां भाग पुस्तक की सज़्पादिका मुज़्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने प्रथम प्रति विमोचन हेतु आचार्य महाप्रज्ञ को भेंट की। उन्होंने बताया कि दो वर्षों में इस सीरिज की व्यापकता इस कदर बढ़ चुकी है कि प्रत्येक अंक के आने से पूर्व ही प्रतियां बुक हो जाती है। उल्लेखनीय है कि इस सीरीज की अब तक लाखों प्रतियां बिक चुकी है। प्रत्येक पाठक का मानना है कि इन पुस्तकों में उनकी हर समस्या ाक समाधान मिल

जाता है। इसी असर पर मुज़्य नियोजिका साध्वी विश्रुत विभा ने ‘सुख का स्रोत कहां है?’ की प्रथम प्रति भी भेंट की।

आचार्य तुलसी का 96वां जन्मोत्सव आयोजित

नैतिकता विहिन धर्म मुझे स्वीकार नहीं : आचार्य महाप्रज्ञ

29वर्ष पूर्व हुआ था विलक्षण दीक्षा समण श्रेणी का उद्‌भव

लाडनूं 20 अक्टूबर, 2009।

अणुव्रत आन्दोलन के द्वारा सम्पूर्ण देश में नैतिकता एवं मानवीय एकता का अद्‌भूत माहौल बनाने वाले आचार्य तुलसी के 96वें जन्मोत्सव के अवसर पर विशाल जनमेदनी को सम्बोधित करते हुए राष्ट्रसंत आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा कि धर्म का मूल नैतिकता, प्रामाणिकता है। जिसकी पृष्ठभूमि में इनका अभाव है तो मैं उस धर्म को मानने के लिए तैयार नहीं हूं। आचार्य तुलसी के अणुव्रत आन्दोलन के द्वारा नैतिकता एवं मानवीय एकता के सन्दर्भ में विलक्षण कार्य किया। आज के देख सकते हैं कि 20वीं सदी में मानवीय एकता का कार्य करने वालों में आचार्य तुलसी का प्रथम पंक्ति में नाम आता है। उन्होंने आचार्य तुलसी को मानव धर्म का प्रवक्ता बताया।

आचार्यवर ने आचार्य तुलसी की कल्पना के फूल जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में आयोजित इस कार्यक्रम में अणुव्रत के निर्देशक तत्त्वों की व्याख्या कराते हुए कहा कि व्यक्तिगत संग्रह और व्यक्तिगत उपभोग की सीमा होती तो अमेरिका में आर्थिक मंदी नहीं आती। इस वैश्विक आर्थिक मंदी का समाधान व्यक्तिगत संग्रह को सीमा एवं व्यक्तिगत उपभोग की सीमा करने से संभव होता है। आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि वर्तमान में धर्म ग्रन्थों और पंथों में सीमित हो गया है। जो धर्म बाजार में, जीवन व्यवहार में न आये वह धर्मकि काम का हो सकता है। आचार्यश्री ने अपनी पुस्तक तुलसी विचार दर्शन एवं भिक्षु विचार दर्शन का उल्लेख करते हुए कहा कि साधन शुद्धि पर सर्वप्रथम विचार करने वाले महापुरुष आचार्य भिक्षु हैं और उसके बाद महात्मा गांधी ने इस पर बहुत बल दिया है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने आचार्य तुलसी को युग प्रवर्तक आचार्य बताते हुए कहा कि आचार्य तलुसी ने अणुव्रत रूपी जिस धर्म का प्रवर्तन किया है वह जाति विशेष के लिए नहीं सम्पूर्ण मानवता के लिए है। जब तक मानव जाति रहेगी तब तक अणुव्रत का मूल्य रहेगा। राष्ट्रसंत ने कहा कि वर्तमान दुनिया में जितना भय का वातावरण है उतना कभी नहीं था। पुराने जमाने में भी युद्ध होता था, पर कुछ नियमों के साथ। निहत्थों को नहीं मारा जाता था। पर आज लगता है यह दुनिया निहत्थों को मारने वाली दुनिया हो गई है।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि दुनिया में अनैतिकता, हिंसा आदि अपराध बढते हैं तो प्रकृत्ति अपने आप किसी न किसी महापुरुष को अवतरित कर देती है। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के द्वारा मानवीय एकता का कार्य किया। क्योंकि इंसान से प्यार करना सबसे ज्यादा

महत्त्वपूर्ण है। अगर मुझे कोई कहे कि भगवान की पूजा करोगे या इंसान से प्यार तो मैं भगवान की पूजा को छोड़ इंसान से प्यार करने को महत्त्व दूंगा। क्योंकि प्राणीमात्र से प्यार करने में सबसे बड़ी अहिंसा है। उन्होंने आचार्य तुलसी को 20वीं सदी में होने वाले संता के आभूषण बताया।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा ने कहा कि आचार्य तुलसी का जीवन बहुआयामी था। उनमें जितनी कठोरता थी उतनी ही कोमलता भी थी। उन्होंने जिस तरह का जीवन जीया,, जीवन में जो कुछ किया वह एक महान साधक ही कर सकता है। साध्वीप्रमुखाश्री ने आचार्य तुलसी की आत्मथा 'मेरा जीवन मेरा दर्शन' का उल्लेख करते हुए कहा कि आचार्य तलुसी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को जानने के लिए उनकी आत्म कथा आयना बनकर प्रस्तुत है। उल्लेखनीय है कि इस कार्यक्रम में साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा द्वारा सम्पादित आचार्य तुलसी की आत्मकथा का 18,19 एवं 20वां भाग विमोचित हुआ। आत्मकथा के इन खण्डों को एन.जी. फाउण्डेशन के अध्यक्ष गोविन्दराम सरावगी ने आचार्य प्रवर को विमोचन हेतु समर्पित की।

मुख्य नियोजिका साध्वीश्री विश्रुतविभा ने कहा कि मेरू की ऊंचाई एवं सागर की गहराई नापना दुरूह है, वैसे ही आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व को नापना भी दुरूह है। उन्होंने साधारण परिवेश में जन्म लेते हुए भी असाधारण कार्य किये।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं जोधपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति लोकेन्द्रसिंह शेखावत ने कहा कि आचार्य तुलसी का जीवन सम्पूर्ण मानव जाति के लिए प्रेरणादायि है। उन्होंने कहा कि आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन के द्वारा अच्छे इंसान का कार्य किया। ऐसे महत्त्वपूर्ण कार्यों के कारण ही उनके बताये रास्ते पर पूरी दुनिया चलने को तैयार है। उन्होंने आचार्य आचार्य महाप्रज्ञ को दुनिया का बहुत बड़ा दार्शनिक बताया। अजमेर दरगाह एवं दरबान अजुंमन कमेटी के अध्यक्ष गुलाबनबी कीबरिया ने आचार्य तुलसी के संदेश को अम्ल करने की जरूरत बताई एवं ऐसे भाईचारे का संदेश देने वाले कार्यक्रमों में बार–बार हाजिर हाने की इच्छा जाहिर की। डॉ. बनवारी लाल गौड़ ने आचार्य तुलसी को आयुर्वेदाचार्य बताते हुए कहा उनके साहित्य में जगह–जगह आयुर्वेद के सिद्धांत मिलते हैं। उन्होंने आचार्य तुलसी को ज्ञान का उर्जस्वी स्रोत बताया।

समण श्रेणी ने मनाया अपना 30वां जन्म दिन

आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ की दूरदृष्टिपूर्ण सोच का ही परिणाम है कि 29 वर्ष पूर्व एक विलक्षण दीक्षा के रूप में नई श्रेणी का शुभारंभ किया जो आज सम्पूर्ण विश्व में जैन धर्म एवं आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ के अवधानों को प्रसारित कर रही है। आचार्य तुलसी के जन्म दिवस पर ही इस श्रेणी ने अपना 30वां जन्म दिन मनाया। इस श्रेणी के समणी

नियोजिका मधुरप्रज्ञा ने समण श्रेणी के विकास क्रम को अभिव्यक्त किया। समणी कुसुमप्रज्ञा, अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल की राष्ट्रीय अध्यक्ष कनक बरमेचा, साध्वी स्वस्तिकप्रभा, श्रीमती सरोज दूगड़ सुश्री नीलम खटेड़ अपने भावों को प्रस्तुत किया। मुमुक्षु बहिनों एवं स्थानीय तेरापंथ महिला मण्डल ने गीत के द्वारा अपनी श्रद्धा समर्पित की। इस अवसर पर आचार्य महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री शांतिलाल बरमेचा ने आए हुए मुख्य अतिथियों को साहित्य भेंट कर उनका सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

प्रभात फेरी का आयोजन

आचार्यतुलसी के 96वें जन्म दिवस के अवसर पर प्रातः काल प्रभात फेरी का आयोजन किया गया जो ऋषभ द्वार से प्रारंभ होकर नगर के मुख्य मार्गों से होते हुए जैन विश्व भारती पहुंचा। प्रभातफेरी में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मण्डल, तेरापंथ कन्या मण्डल और तेरापंथ युवक परिषद के कार्यकर्त्ताओं ने उद्घोष, गीतिका व जयकारों के साथ आचार्यश्री तुलसी को याद किया।

लाडनूं 21 अक्टूबर 2009।
आचार्यश्री महाप्रज्ञ के दर्शन करते राजस्थान विधानसभा के मुख्य सचेतक विरेन्द्र बेनीवाल।

लाडनूं, 20 अक्टूबर 2009।
अणुव्रत प्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी के 96वें जन्म दिवस पर आचार्यश्री महाप्रज्ञ उद्बोधन देते हुए।

20 अक्टूबर 2009
कार्यक्रम में अजमेर दरगाह एवं दरबान अजुंमन कमेटी के अध्यक्ष गुलाबनबी कीबरिया अपने विचार व्यक्त करते हुए।